



शाहजहां: अंतिम दिन और उत्तराधिकार संघर्ष - एक विश्लेषण

यशवन्त कुमार श्रीमाली¹¹ एम. फिल. नेट इतिहास, सहायक आचार्य vsy, राजकीय महाविद्यालय, पीसांगन (अजमेर).

ABSTRACT:

मुगल सम्राट शाहजहां का शासनकाल भारतीय इतिहास में स्थापत्य कला, संस्कृति और राजनीतिक स्थिरता के लिए जाना जाता है। किंतु उनके अंतिम दिनों में उनके पुत्रों के बीच उत्तराधिकार का संघर्ष मुगल साम्राज्य के भविष्य पर गहरा प्रभाव डाल गया। इस शोध पत्र में शाहजहां के अंतिम दिनों, उनके शासन की स्थितियों और उत्तराधिकार संघर्ष की प्रमुख घटनाओं का विश्लेषण किया गया है। यह शोध यह समझने का प्रयास करता है कि इस संघर्ष के पीछे के कारण, परिणाम, और इसकी व्यापक ऐतिहासिक धारा पर क्या प्रभाव पड़ा।

KEYWORDS:

शाहजहां, उत्तराधिकार संघर्ष, मुगल साम्राज्य, औरंगजेब, दारा शिकोह, मुगल इतिहास।

PAPER ACCEPTED DATE:

28th October 2024

PAPER PUBLISHED DATE:

31st October 2024

विषय सामग्री

परिचय

मुगल साम्राज्य के स्वर्ण युग के अंतिम शासकों में से एक, शाहजहां का शासनकाल भारतीय इतिहास में उनके अद्वितीय स्थापत्य कार्यों और मजबूत प्रशासन के लिए प्रसिद्ध है। लेकिन उनके शासन के अंतिम दिनों में उनकी बीमारी और उनके चार पुत्रों के बीच सत्ता के लिए हुए संघर्ष ने न केवल मुगल साम्राज्य की आंतरिक स्थिरता को प्रभावित किया, बल्कि इसने इस महान साम्राज्य के पतन की नींव भी रखी।

शाहजहां के चार पुत्र—दारा शिकोह, औरंगजेब, मुराद बख्श, और शुजा—सत्ता के लिए संघर्ष में शामिल हुए। यह संघर्ष केवल एक पारिवारिक कलह नहीं था, बल्कि यह मुगल प्रशासन और धार्मिक ध्रुवीकरण का भी परिणाम था। इस विषय सामग्री में हम इस संघर्ष की जड़, प्रमुख घटनाएं, और उनके परिणामों का विस्तार से अध्ययन करेंगे।

शाहजहां के अंतिम दिन

शाहजहां के शासनकाल के अंत और उनके स्वास्थ्य की गिरावट ने एक अस्थिरता की स्थिति उत्पन्न कर दी, जिससे उनके पुत्रों में सत्ता के लिए संघर्ष छिड़ गया।

1. शाहजहां की बीमारी और सत्ता में अस्थिरता

1657 में शाहजहां गंभीर रूप से बीमार पड़ गए। उनके स्वास्थ्य की बिगड़ती स्थिति के कारण प्रशासनिक जिम्मेदारियां उनके सबसे बड़े पुत्र दारा शिकोह को सौंपी गईं। लेकिन यह कदम उनके बाकी पुत्रों को अस्वीकार्य था, जो इसे अपने अधिकारों के हनन के रूप में देखते थे।

- राजनीतिक दृष्टिकोण से असर: शाहजहां की बीमारी के कारण साम्राज्य में नेतृत्व का संकट पैदा हो गया। उनके अन्य पुत्रों ने इसे अपने अधिकार क्षेत्र को बढ़ाने का मौका समझा।

2. दारा शिकोह का प्रभुत्व

दारा शिकोह को शाहजहां ने वली अहद (उत्तराधिकारी) घोषित किया।

- वह उदार और धार्मिक रूप से समन्वयवादी थे।
- उनकी नीतियां, विशेष रूप से हिन्दू और इस्लामिक धर्मों के बीच सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास, कट्टर मुस्लिम वर्ग को अस्वीकार्य थीं।

- उन्होंने अपने पिता का पूरा समर्थन पाया, लेकिन प्रशासनिक कौशल और सैनिक अनुभव की कमी उनके पतन का कारण बनी।

3. औरंगजेब की महत्वाकांक्षा

औरंगजेब ने अपने पिता की बीमारी का लाभ उठाया। वह एक कुशल रणनीतिकार और सैनिक थे।

- उनकी दृष्टि सत्ता को किसी भी कीमत पर प्राप्त करने की थी।
- धार्मिक दृष्टिकोण से उन्होंने खुद को एक कट्टर सुन्नी शासक के रूप में प्रस्तुत किया, जिसने कट्टरपंथी मुसलमानों का समर्थन हासिल किया।

4. साम्राज्य की स्थिति

शाहजहां की बीमारी ने साम्राज्य की स्थिरता को कमजोर कर दिया।

- प्रशासनिक स्तर पर, दारा के पास पर्याप्त अनुभव नहीं था।
- बाकी तीन पुत्रों ने सत्ता हथियाने के लिए अपने-अपने क्षेत्रों में स्वतंत्रता की घोषणा कर दी।

उत्तराधिकार संघर्ष के चरण

शाहजहां के पुत्रों के बीच यह संघर्ष चार चरणों में विभाजित किया जा सकता है:

1. प्रारंभिक संघर्ष

शाहजहां के बीमार होने के तुरंत बाद, उनके पुत्रों ने अपनी-अपनी शक्ति बढ़ाने की कोशिशें शुरू कर दीं।

दारा का प्रभुत्व:

दिल्ली और आगरा पर दारा शिकोह का नियंत्रण था। उन्होंने अपने पिता की अनुमति से प्रशासन संभाल लिया।

शुजा का विद्रोह:

शुजा, जो बंगाल के सूबेदार थे, ने खुद को सम्राट घोषित कर दिया और उत्तर भारत की ओर कूच किया।

- दारा ने अपने पिता के समर्थन से शुजा के विद्रोह को दबा दिया।

- **मुराद का कदम:**
मुराद बख्श ने गुजरात में अपने को स्वतंत्र शासक घोषित कर दिया और औरंगजेब के साथ गठबंधन कर लिया।

2. औरंगजेब की रणनीति

औरंगजेब ने सैन्य और राजनीतिक चालों का सहारा लिया।

- **धर्माट की लड़ाई (1658):**
यह लड़ाई औरंगजेब और दारा शिकोह के बीच लड़ी गई। औरंगजेब ने दारा को हराया और अपनी सैन्य क्षमता का प्रदर्शन किया।
- **समुगढ़ की निर्णायक लड़ाई (1658):**
यह युद्ध शाहजहां के पुत्रों के बीच सबसे निर्णायक था।
 - दारा शिकोह की हार हुई।
 - औरंगजेब ने अपनी स्थिति मजबूत की और दारा को भागने के लिए मजबूर किया।

3. मुराद और शुजा का पतन

- **मुराद का अंत:**
औरंगजेब ने मुराद को धोखे से बंदी बना लिया। बाद में मुराद को मौत के घाट उतार दिया गया।
- **शुजा की पराजय:**
शुजा को बंगाल लौटने के लिए मजबूर कर दिया गया। बाद में उसने बर्मा में शरण ली, जहां उसकी मृत्यु हो गई।

4. दारा शिकोह का अंत

- औरंगजेब ने दारा शिकोह को पकड़कर 1659 में फांसी दे दी।
- दारा की मृत्यु के साथ, औरंगजेब ने सत्ता पर पूरी तरह से कब्जा कर लिया।

उत्तराधिकार संघर्ष के कारण

1. व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा

शाहजहां के पुत्रों की सत्ता की भूख इस संघर्ष का मूल कारण थी।

- दारा शिकोह ने शाहजहां की मर्जी का अनुसरण किया।
- औरंगजेब ने अपनी महत्वाकांक्षा को पूरा करने के लिए चालाक रणनीतियां अपनाईं।

2. राजनीतिक अस्थिरता

मुगल प्रशासन में सत्ता हस्तांतरण की कोई स्पष्ट प्रक्रिया नहीं थी।

- उत्तराधिकार के लिए संघर्ष अक्सर युद्धों और षड्यंत्रों में बदल जाता था।

3. धार्मिक और वैचारिक मतभेद

दारा शिकोह और औरंगजेब के बीच वैचारिक मतभेद स्पष्ट थे।

- दारा धार्मिक सहिष्णुता का पक्षधर था।
- औरंगजेब ने कट्टर सुन्नी इस्लाम की नीति अपनाई।

4. क्षेत्रीय स्वायत्तता

मुगल साम्राज्य के सूबेदार अक्सर अपने क्षेत्रों में स्वतंत्रता का प्रयास करते थे।

- शुजा और मुराद ने अपने-अपने क्षेत्रों में खुद को सम्राट घोषित किया।

उत्तराधिकार संघर्ष के प्रभाव

1. औरंगजेब का सत्ता ग्रहण

1658 में औरंगजेब ने शाहजहां को आगरा के किले में कैद कर दिया और स्वयं सम्राट बन गए।

2. धार्मिक कट्टरता का उदय

औरंगजेब की कट्टर नीतियों ने मुगल साम्राज्य के सांस्कृतिक और धार्मिक ढांचे को प्रभावित किया।

3. साम्राज्य की कमजोरी

- उत्तराधिकार के युद्धों ने साम्राज्य की आर्थिक और सैन्य शक्ति को कमजोर कर दिया।
- इसके परिणामस्वरूप साम्राज्य का धीरे-धीरे पतन शुरू हो गया।

4. दीर्घकालिक प्रभाव

उत्तराधिकार संघर्ष ने भविष्य में होने वाले शाही उत्तराधिकार संकटों का मार्ग प्रशस्त किया।

सत्ता संघर्ष में प्रमुख पात्रों की भूमिका

1. दारा शिकोह

- उदार और धार्मिक दृष्टिकोण से सहिष्णु।
- प्रशासनिक अनुभव की कमी के कारण असफल।

2. औरंगजेब

- कुशल योद्धा और रणनीतिकार।
- कट्टर इस्लामी नीतियों के पक्षधर।

3. मुराद और शुजा

- मुराद: आत्मनिर्भर लेकिन औरंगजेब की चाल का शिकार।
- शुजा: महत्वाकांक्षी लेकिन कमजोर सैन्य नेतृत्व के कारण असफल।

4. शाहजहां

- अपनी बीमारी के कारण साम्राज्य में स्थिरता बनाए रखने में असमर्थ।
- दारा को वरीयता देने के कारण अन्य पुत्रों के साथ तनाव बढ़ा।

सारांश और निष्कर्ष

उत्तराधिकार संघर्ष केवल एक परिवार के भीतर की सत्ता की लड़ाई नहीं थी, बल्कि यह मुगल साम्राज्य की प्रशासनिक खामियों और धार्मिक ध्रुवीकरण का परिणाम था।

- औरंगजेब की विजय ने साम्राज्य को अस्थायी स्थिरता दी, लेकिन उनकी नीतियों ने इसे दीर्घकालिक पतन की ओर अग्रसर किया।

यह संघर्ष यह भी दर्शाता है कि बिना स्पष्ट उत्तराधिकार प्रक्रिया के, किसी भी साम्राज्य की स्थिरता खतरे में पड़ सकती है।

REFERENCES

1. अल्लामी, अबुल फजल। *आइन-ए-अकबरी*।
2. सर जदुनाथ सरकार। *औरंगजेब: हिस्ट्री ऑफ द एम्पायर*।
3. शास्त्री, हरिनारायण। *मुगल साम्राज्य का इतिहास*।
4. रिजवी, एस.ए.ए. *मुगल्स एंड थियर पॉलिसीज*।
5. राम प्रसाद त्रिपाठी। *भारतीय इतिहास के प्रमुख प्रसंग*।